परमाचार्य दत्तात्रेय और उनके शिष्य परशुराम

श्रीविद्या के परमाचार्य भगवान् दत्तात्रेय का चरित्र अत्यन्त अटपटा है जो हम-जैसे साधारणजन के लिये तो क्या, बड़े-बड़े योगिजनों के लिये भी अगम्य है 'योगिनामप्यगम्यः'।

परमसाध्वी पतिव्रता अनसूया के पातिव्रत की परीक्षा लेने के लिये अपनी पत्नियों का स्त्री-हठ पूरा करने के निमित्त त्रिदेव (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) उनके आश्रम में अतिथि बनकर तब पहुँचे, जब उनके पति महर्षि अत्रि तपोऽनुष्ठानार्थ नदी-तट पर गये हुए थे। वहाँ पहुँचकर उन्होंने सती से विवस्त्र होकर भिक्षा परोसने का हठ पकड़ा। सती की सूझ अद्भुत थी। उन्होंने भीतर जाकर पतिदेव का चरणोदक पिया और उसे अतिथियों पर छिड़ककर उन्हें तीन दुधमुँहे बालक बना दिया। फिर गोद में लेकर वे उन्हें स्तन्यपान की भिक्षा कराने लगीं। अन्ततः त्रिदेवों की पत्नियों द्वारा सती से बार-बार क्षमा माँगने और उन्हें **'पतिव्रता-शिरोमणि'** कहकर सम्बोधित करने के बाद ही उनके पति उन्हें पुनः पूर्वरूप में प्राप्त हुए। इन त्रिदेवों के समिश्र अंशों से सती अनुसूया को पुत्रलाभ का सुख प्रदान करने के लिये 'दत्तात्रेय' अवतार बन गये, जो आज तक अखण्ड रूप में चला आ रहा है। उनके आविर्भाव की जयन्ती-तिथि के रूप में मार्गशीर्ष पूर्णिमा अमर हो गयी।

योगाचार्य भगवान् दत्तात्रेय स्मरण करते ही प्रत्यक्ष उपस्थित हो जाते हैं। वे मूलतः चतुर्थाश्रमी अवधूतश्रेणी के संन्यासी का रूप धारण किये रहते हैं, किंतु समय-समय पर जैसी परिस्थिति उपस्थित होती है, उसके अनुरूप अपनी योग-सामर्थ्य के रूप धारण कर लेते हैं। कार्तवीर्य सहस्रार्जुन, प्रह्लाद, यदु, हैहय-जैसे सैकड़ों- हजारों अनुगृहीतों ने उनसे योग एवं भोग-मोक्ष की सिद्धियाँ प्राप्त की हैं, जैसा कि भागवतकार कहते हैं-

यत्पादपंकजपरागपवित्रदेहा योगर्द्धिमापुरुभयीं यदुहैहयाद्याः। *(श्रीमद्भागवत २/७)*

इनके अवधूत होने का इससे प्रबल प्रमाण और क्या हो सकता है कि ये प्रातः स्नान वाराणसी में करते हैं, कोल्हापुर पहुँचकर जप-ध्यान की विधि पूरी करते हैं, माहुरगढ़ या मातापुर में भिक्षा ग्रहण करते हैं और शयन करते हैं सह्याद्रि पर्वत पर। **'त्रिपुरा-रहस्य'** के अनुसार इनका एक आश्रम गन्धमादन पर्वत (हिमालय) पर भी है। इनकी चरणपादुकाएँ वाराणसी, आबूपर्वत आदि कई स्थानों पर हैं। दत्तात्रेय की बीजमन्त्र **'द्रां'** है। त्रिपुरारहस्य (माहात्म्य-ज्ञानकाण्ड), दत्तोपनिषद्, वज्रकवच, पद्म-पुराण भूमिखण्ड

(अ.८३), मार्कण्डेयपुराण (१७-३८ तथा २२ अ.), भागवत (७ और ११ स्कन्ध), तथा महाभारत (सभापर्व ३८, अनुशा. १३८, १५-५६) में इनका चरित्र वर्णित है।

भगवान दत्तात्रेय को इतनी अद्‌भुत सामर्थ्य प्राप्त होने का मूलस्रोत उनके द्वारा श्रीविद्या की असाधारण सिद्धि-प्राप्ति ही कही जायेगी। वे श्रीविद्या के परमाचार्य हैं। शास्त्रों में बताया गया है कि श्रीविद्या के उपासकों को यहीं भुक्ति और मुक्ति दोनों सुलभ होती हैं-

श्रीसुन्दरीसेवनतत्पराणां भोगश्च मोक्षश्च करस्थ एव।

परशुराम- जगती का परम सौभाग्य है कि परशुराम- जैसा अवतारी वत्स इन्हीं दत्त-कामधेनु को प्राप्त हो गया जिससे संसार को श्रीविद्या का दुग्धामृत सुलभ हो पाया। इसकी कथा भी बड़ी रोचक है।

पिता जमदग्नि के हत्यारे सहस्रार्जुन की पूरी क्षत्रिय जाति के साथ इक्कीस बार युद्ध कर परशुराम ने पृथ्वी को निःक्षत्रिय बना डाला और उनके रक्तसे तर्पणकर मृत पिता का श्राद्ध किया। तत्पश्चात् वे इस कृत्य से अत्यन्त निर्विण्ण हो जीती हुई सारी पृथ्वी ब्राह्मणों को दानकर चित्त-शान्ति के लिये गन्धमादन पर्वत की ओर चले गये।

वहाँ उनकी अलर्क (हारितायन) के माध्यम से संवर्त से भेंट हुई और संवर्त के माध्यम से वे दत्त गुरु के आश्रम पर पहुँचे। वहाँ अवधूत संन्यासी दत्तप्रभु अपने वास्तविक स्वरूप का गोपन कर दिव्य पर्यंक पर लेटे हुए थे। परम सुन्दरी वार-वनिता उनके पैर दबा रही थी और बीच-बीच में पास में रखे स्वर्णकलश से माणिक्य चषक को भर-भरकर दिव्य सुरा पान करने के लिये उन्हें दे रही थी। द्वारपर बड़ा ही सुहावना सारमेय (कुत्ता) रखवाली कर रहा था।

*परशुराम को देखते ही दत्तप्रभु ने उनसे पूछा- **'तुम-जैसै महान् तपस्वी एवं कृतकृत्य पुरुष को मुझ जैसे परम पतित के पास आने का क्या कारण है? तुम्हें कौन-सी कमी है? हम तो संन्यासी होते हुए भी रसना और उपस्थ-जैसी सर्वजयी इन्द्रियों द्वारा जीते जाकर इस स्थिति में पहुँचे हुए हैं। कोई भी सज्जन हम-जैसे पतित की हवा से भी दूर भागता है। तब तुम किस उद्देश्य से यहाँ आये हो?'*** परशुराम का हृदय तपस्या और निर्वेद से निष्कल्मष हो गया था। वे प्रभु की अटपटी लीला समझ गये और उनके चरण पकड़कर कहने लगे- ***'आप मुझे भरमाये नहीं, संवर्त ने सब कुछ बता दिया है। आपका मार्ग सत् हो या असत्, आप ही मेरे गुरु हैं। मैं शुद्ध चित्त से आपकी शरण में आया हूँ। मुझ अशरण के अशान्त चित्त को शान्त करने के कृपा कीजिये।***

परीक्षा में सोना सोलह आना खरा उतरने से दत्तगुरु प्रमुदित हो उठे और बोले- 'तुमने ठीक समझा वत्स! तुमने जिस शान्ति की अपेक्षा दिखलायी है, वह शान्ति मात्र ज्ञानयोग से ही प्राप्त होगी। सभी प्राणियों की आत्मा साक्षात् परशिव ही है। सबके हृदय में सदैव भासित रहता हुआ भी वह मोहवश आभास-सा प्रतीत होता है; किंतु विषयीजनों को यह ज्ञान पराशक्ति त्रिपुराम्बा की कृपा के बिना सम्भव नहीं।'

इस प्रकार उपक्रम करके भगवान् दत्तात्रेय ने परशुराम के उत्तरोत्तर प्रश्नों के समाधान के रूप में अपने इस सुयोग्य शिष्य को पराम्बा त्रिपुरा के समग्र रहस्य का ('त्रिपुरा-रहस्यम्' के रूप में) उपदेश कर दीक्षित किया। परशुराम ने भी तदनुसार साधना-उपासना करके पराविद्या त्रिपुराम्बा का प्रसाद पाकर जीवन की कृतार्थता प्राप्त कर ली। 'त्रिपुरा-रहस्य' के माहात्म्यखण्ड में इसका विस्तृत विवरण द्रष्टव्य है।